NCERT SOLUTIONS

CLASS - 9th

aglasem.com

Class : 9th
Subject : हिन्दी
Chapter : 1
Chapter Name : दुख का अधिकार

Q1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए:-
1. किसी व्यक्ति की पोशाक को देखकर हमें क्या पता चलता है?
2. खरबूजे बेचने वाली स्त्री से कोई खरबूजे क्यों नहीं ले रहा था?
3. उस स्त्री को देखकर लेखक को कैसा लगा?
4. उस स्त्री के लड़के की मौत का कारण क्या था?
5. बुढिया को कोई भी उधार क्यों नहीं दे रहा था?

Answer.
1. किसी व्यक्ति की पोशाक या पहनावे को देखकर हमें उसके दर्जे और उसके अधिकार का ज्ञान होता है। इससे ज्ञात होता है कि समाज के लोग उस व्यक्ति के साथ कैसा व्यवहार करेंगे, उसे पलकों में बिठाएँगे या निम्न दर्जे का समझेंगे।

2. खरबूजे बेचने वाली के घर में सूतक था क्योंकि उसके पुत्र की मौत का एक दिन भी नहीं बीता था और वो खरबूजे बेचने आई थी। जैसा की लोग मानते हैं कि जिस घर में सूतक लगा हो वहाँ का पानी भी नहीं पीना चाहिए और यही कारण था कि खरबूजे खाने से लोगों को आपने धर्म भ्रष्ट होने का भय सता रहा था, इसलिए उससे कोई खरबूजे नहीं ले रहा था।

3. उस स्त्री को फुटपाथ पर देखकर लेखक को दुख हुआ एवं उसकी तरफ सहानुभूति के भाव भी उमड़ पड़े और मन में व्यथा सी उठी। जिससे कि उसके मन में उसके दुःख के कारण को जानने और उसको दूर करने का ख्याल आया परंतु उसकी पोशाक आड़े आ रही थी।

4. उस स्त्री का बेटा खरबूजे बेचता था और हर रोज़ कि तरह उस दिन भी मुँह-अँधेरे बेलों में खरबूजे चुनने गया था और वह खरबूजे चुन ही रहा था कि तभी उसका पैर साँप पर पड़ गया था और साँप ने उसे डस लिया जिसके कारण उसकी उसी समय मृत्यु हो गई।

5 . बुढिया बहुत गरीब थी और उस घर का गुजर-बसर करने वाला एक मात्र सहारा उसका बेटा भी अब इस दुनिया में नहीं था। तो लोगों को यह भय था कि अगर वह उस गरीब को पैसे उधार दे देंगे तो वह वापस कहाँ से करेगी अतः उन्हें अपने पैसे वापस न मिलने का दर था ।

Page : 10 , Block Name : मौखिक

Q2 (क) निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर (25 से 30 शब्दों में) लिखिए:-

1. मनुष्य के जीवन मे पोशाक का क्या महत्व है?

2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?
3. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?
4. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था ?
5. लड़के की मृत्यु के दूसरे ही दिन बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चली गयी?
6. बुढिया के दुख को देखकर लेखक को अपने संभ्रांत में रहने वाली महिला की याद क्यों आई?

Answer. (क)

1. मनुष्य के जीवन में पोशाक (पहनावा) का महत्वपूर्ण स्थान या महत्व है। यह पोशाकें ही तो है जो व्यक्ति को प्रतिष्ठित या हीन बनाती है। समाज में किसका अधिकार कितना है यह पहनावे से ही तो ज्ञात होता है।कई बार यह मनुष्य के भाग के दरवाजे खोल देती है। यही तो उसे समाज में सम्मान और आदर दिलाती है और यही मनुष्य को नीचे झुकने से रोकती है।

2 . जब हमें अपने से कम हैसियत रखने वाले मनुष्यों के साथ बात करना हो, या सहानुभूति प्रकट करनी होती है तो हम संकोच करते है जैसे लेखक अपनी पोशाक के गंदे हो जाने की वजह से बुढ़िया से उसके दुख का कारण नहीं जान पाया। इसी प्रकार हमारी पोशाक भी हमें ऐसे लोगों के पास जाने के समय बंधन ओर अड़चन बन जाती है।

3 . लेखक उस स्त्री के रोने का कारण इसलिए नहीं जान पाया, क्योंकि उसकी पोशाक इस कष्ट को जान सकने में अड़चन पैदा कर रही थी क्योंकि उच्च कोटि की पोशाक के कारण फूटपाथ पर नहीं बैठ सकता था। लेखक का मन तो बुढ़िया को देखकर व्यथित हो उठा पर उसकी पोशाक कारण जानने में अड़चन बन गयी।

4 . भगवाना बहुत ही गरीब था उसके पास शहर के पास में ही डेढ़ बीघा जमीन थी जिसमें वह में खरबूजे और हरी सब्जियाँ- तरकारियाँ उगाया करता था । वह हर रोज़ सब्जी मंडी जाता या फिर कभी-कभी फूटपाथ पर बैठकर उन्हें बेचा करता था। इस प्रकार वह अपने परिवार का निर्वाह करता था।

5 . लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन ही खरबूजे बेचने जाना बुढ़िया की विवशता थी। साँप के डसे लड़के की झाड़ फूँक कराने, नाग देवता की पूजा और मृत्यु के बाद अन्त्येष्टि करने में हुए खर्च हुआ।एक ओर उस लड़के के छोटे छोटे बच्चे जो भूख से परेशान थे और घर में कुछ भी खाने को भी नही था। वहीँ दूसरी तरफ उसकी बहू भी अत्यंत बीमार थी, जिसका इलाज ज़रूरी था।यही कुछ कारणो की वजह से पैसे कमाने की कोशिश में वह दूसरे ही दिन खरबूजे बेचने चली ।

6 **.** लेखक के पड़ोस में एक संभ्रांत महिला रहती थी। उसके भी पुत्र की मृत्यु हो गयी थी और बुढिया के पुत्र की भी पर दोनों कि परिस्थितियां अलग होने के कारण दुःख माने के तरीके अलग थे । बुढ़िया की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी , उसके बेटे के बच्चे भी भूखे थे। ऐसे कई ही कारणों कि वजह से वह घर बैठ कर रो नहीं सकती थी। जबकि संभ्रांत महिला ढाई मास (महीने) से पलंग पर पड़ी थी यही नहीं डॉक्टर उसके सिर पर ही बैठा रहता था। लेखक इन दोनों की तुलना करना चाहता था। यही कारण है की उसे संभ्रांत महिला की याद आ गयी।

aglasem.com

Page : 10 , Block Name : लिखित

Q2 (ख) निम्नलिखित प्रश्नो के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए:-

1. बाज़ार में लोग खरबूजे वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे हैं? अपने शब्दों में लिखिए।
2. पास पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला?
3. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए?
4. लेखक ने बुढ़िया के दुख का अंदाज़ा कैसे लगाया?
5. इस पाठ का शीर्षक 'दुख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिये?

Answer. (ख)
1. बाज़ार में लोग खरबूजे वाली स्त्री के बारे में लोग तरह-तरह की बाते कहते हुए तानाकशी कर रहे थे। उनमे से कोई उसे बेहया तो कोई बेगैरत बोल रहा था, जो अपने बेटे के मरने के एक दिन बाद ही खरबूजे बेचने आ गई। एक सज्जन वहीं फुटपथ पर बैठकर अपने कान दिया सलाई से खुजाते हुए बोल रहे थे , जैसी नियत ख़ुदा वैसी ही बरकत देता है। इसका मतलब यह था कि उनकी नज़र में बुढ़िया अपने बेटे को मरे हुए एक दिन भी नहीं होने दी और खरबूजे बेचने आ गयी जिससे यही समझ आया कि उसके लिए पैसे कमाना सबसे ज़रूरी है और यही कारण है कि भगवान् ने उससे अपना बेटा ले लिया ।

2. पास पड़ोस की दुकानों में पूछने से लेखक को यह पता चला की बुढ़िया का एक तेईस साल का पुत्र था । एवं शहर के बाहर ज़मीन पर सब्ज़ियाँ और खरबूजे उगा कर बेचा करता था। एक दिन पहले व सुबह के समय खरबूजे तोड़ते समय उसका पैर साँप पर पड़ा और उसने लड़के को डस लिया । उसकी माँ ने कई कोशिशें की झाड़- फूँक भी कराई पर कुछ काम नहीं आया और उसकी मौत हो गयी। वह घर में अकेला कमाने वाला था, उसके बाद घर में कोई कमाने वाला न रहा, तो मजबूरी में उसे अगले ही दिन खरबूजे बेचने के लिए बाज़ार आना पड़ा।

3. अपने पुत्र को बचाने के लिए बुढ़िया ने सारे उपाय किए, जिसमे वो सक्षम थे। जैसे साँप का विष उतारने के लिए झाड़- फूँक कराया, नाग देवता की पूजा की, परन्तु तब भी उसकी मृत्यु हो गई। घर में जो भी आटा, अनाज था दान-दक्षिणा के रूप में दे दिया गया । वह अपने बेटे के पैर पकड़ कर विलाप करने लगी, पर विष के कारण उसके पुत्र का शरीर काला पड़ गया और वह मृत्यु को प्राप्त कर गया।

4 . लेखक ने अपने पड़ोस में रहने वाली संभ्रांत महिला को याद किया। उस महिला का पुत्र पिछले वर्ष चल बसा था। इसी कारण वह महिला ढाई मास तक पलंग पर पड़ी रही थी। अपने पुत्र की याद में हर 15 मिनट में मूर्छित हो जाती थी यही नही दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। उसके सर पर बर्फ की पट्टी रखी रहती थी, उसको अपने बेटे के जाने के शोक के सिवाय कुछ होश नहीं था और न ही कोई ज़िम्मेदारी थी। उस महिला के दुख से तुलना करते हुए लेखक को अंदाज़ा हुआ की इस गरीब बुढ़िया का दुख भी कितना बड़ा होगा।

aglasem.com

5. 'दुख का अधिकार' कहानी को पढ़ कर ऐसा लगता है की संभ्रांत व्यक्तियों का दुख ज्यादा भारी होता है, उन्हे अपना दुख व्यक्त करने का अधिकार होता है, और तो और उनके दुख को देखकर और लोग भी दुखी होते है, उन्हे सहानुभूति देते है। परंतु जब किसी गरीब को दुख होता है है, तो लोग उसका उपहास ही नहीं बनाते बल्कि घृणा भी करते है। तरह-तरह की बातें बनाकर उन पर ताने कसते है। ऐसा लगता है जैसे गरीब को दुख व्यक्त करने का भी अधिकार नहीं है। इस पाठ की कहानी इसी दुख के आस-पास घूमती है अतः यह शीर्षक पूरी तरह से सार्थक है।

Page : 10 , Block Name : लिखित

Q2 (ग) निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए :-

1. जैसे वायु की लहरें कटी हुई पतंग को सहसा भूमि पर नहीं गिर जाने देती उसी तरह खास परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमे झुकने से रोक देती है?
2. इनके लिए बेटा- बेटी, खसम-लुगाई , धर्म- ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।
3. शोक करने गम मनाने के लिए भी सहूलियत चाहिए और दुखी होने का भी एक अधिकार होता है।

Answer. (ग)
1. इन पंक्तियों में लेखक ने पोशाक की तुलना वायु की लहरों से की है। जिस प्रकार हवा कटी हुई पतंग को तुरंत नीचे नहीं गिरने देती, बल्कि धीरे धीरे नीचे आने की इजाज़त देती है, ठीक उसी प्रकार हमारी पोशाक हमें अपने से नीचे हैसियत वालों से मिलने- जुलने नहीं देती और हमें संकोच होता है।

2. इससे लेखक का आशय यह है की अगर कोई व्यक्ति भूखा है तो वो हर काम कर लेगा। यह गरीबों के लिए एक व्यंग है, क्योंकि परिस्थिति चाहे जैसी भी हो उन्हे पैसा कमाने जाना ही पड़ता है। परंतु लोग उनसे सहानुभूति न रखते हुए यह कहते है की इसके लिए रिश्तेदारी, धर्म कि कोई कीमत नहीं है, नहीं बस रोटी ही सब कुछ है।

3. अमीर लोगों के पास दुख मनाने का समय और सहूलियत होती है। यह अमीरी पर एक तरह का व्यंग्य किया गया है। क्योंकि वह दुख मनाने का दिखावा भी कर पाते है और इसे अपना अधिकार समझते है। परंतु गरीब विवश होता है । वह रोटी कमाने की उलझन में ही रहता है, उसके पास दुख या शोक मनाने का न तो समय और न ही सुविधा होती है। इसलिए उसे दुख का अधिकार भी नहीं है।

Page : 11 , Block Name : लिखित

Q1. निम्नलिखित शब्द समूहों को पढ़ो और समझो -
Answer. छात्र स्वयं करें ।

Page : 11 , Block Name : भाषा अध्ययन

Q2. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए:

aglasem.com

1)ईमान
2) बदन
3) अंदाजा
4) बेचैनी
5)गम
6)दर्जा
7)ज़मीन
8) ज़माना
9) बरकत
Answer..

शब्द	पर्याय
1)ईमान	सच्चाई, धर्म
2) बदन	शरीर, तन, काया
3) अंदाजा	अनुमान
4) बेचैनी	अधीरता, परेशानी
5)गम	दुख, शोक
6)दर्जा	श्रेणी , स्तर
7)ज़मीन	धरती, धरा , वसुधा
8) ज़माना	समय, युग
9) बरकत।	समृद्धि

Page : 11 , Block Name : भाषा अध्ययन

Q3 निम्नलिखित उदाहरण के अनुसार पाठ में आए शब्द -युग्मो को छाँटकर लिखिए -
बेटा-बेटी
Answer..
झाड़ना -फूँकना
छन्नी-कंगना
पोता-पोती
फफक-फफककर
धर्म-ईमान
दुअन्नी-चव्वन्नी
दान-दक्षिणा
लिपट-लिपटकर
पास- पड़ोस
अढ़ाई- मास

Page : 12 , Block Name : भाषा अध्ययन

aglasem.com

Q4. पाठ के संदर्भ के अनुसार निम्नलिखित वाक्यांशों की व्याख्या कीजिए ।

बंद दरवाज़े खोल देना , निर्वाह करना , भूख से बिलबिलाना, कोई चारा न होना , शोक से द्रवित हो जाना
Answer..
बंद दरवाज़े खोल देना : मुश्किलों का सामना करने से किस्मत के बंद दरवाज़े खुल जाते है।
निर्वाह करना- अपने परिवार का भरण- पोषण करना।
भूख से बिलबिलाना- अत्यंत तीव्रता से भूख लगना।
कोई चारा न होना - कोई ओर उपाय न होना।
शोक से द्रवित हो जाना- जब कोई व्यक्ति दूसरों का दुख देख कर खुद दुखी या भावुक हो जाए।

Page : 12 , Block Name : भाषा अध्ययन

Q5. निम्नलिखित शब्द-युग्मों और शब्द समूहों का अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए:-
क) छन्नी-ककना
अढ़ाई- मास
पास-पड़ोस
दुअन्नी- चवन्नी
मुँह-अंधेरे
झाड़ना-फूकना

ख) फफक-फफक कर
बिलख-बिलख कर
तड़प-तड़प कर
लिपट-लिपट कर

aglasem.com

Answer.
क)
छन्नी-ककना – एक ज़माना था जब स्त्रियाँ छन्नी-ककना पहना करती थी।
अढ़ाई- मास - अढ़ाई मास हो गए अभी तक सच्चाई का पता नहीं चल पाया।
पास-पड़ोस - भारत सरकार ने हर नागरिक को अपने पास- पड़ोस में सफाई रखने को खा है।
दुअन्नी- चवन्नी – वो जमाने चले गए जब दुअन्नी- चवन्नी का चलन था।
मुँह-अंधेरे - स्वस्थ रहना है तो मुँह-अंधेरे ही जागना चाहिए।
झाड़ना-फूकना - बीमारी में डॉक्टर काम आते है ये झाड़ना-फूकना नहीं।

ख)
फफक-फफक कर- अपने बेटे को सालों बाद देखकर माँ फफक-फफक कर रो पड़ी।
बिलख-बिलख कर – भूक से बच्चा बिलख-बिलख कर रो रहा था।
तड़प-तड़प कर - कैंसर से ग्रसित व्यक्ति तड़प-तड़प कर दम तोड़ देता है।
लिपट-लिपट कर - कुत्ते के बच्चे अपनी माँ से लिपट-लिपट कर खेल रहे थे।

Page : 12 , Block Name : भाषा अध्ययन

Q6 निम्नलिखित वाक्य संरचाओं को ध्यान पूर्वक पढ़िए और इस प्रकार कुछ और वाक्य बनाइये।
क

1. लड़के सुबह उठते ही भूख से बिलबिलाने लगे ।
2. उसके लिए तो बजाज की दुकान से कपड़ा लाना ही होगा।
3. चाहे उसके लिए माँ के हाथों के छन्नी कगना ही क्यों न बिक जाये।

ख

1. अरे जैसी नियत होती है अल्लाह भी वैसी ही बरकत देता है ।
2. भगवाना जो एक दफे चुप हुआ तो फिर न बोला।

Answer..
क

1. राकेश सुबह उठते ही नदी पहुँच जाता है ।
2. हमें शाम को मास्टर जी से हारमोनियम लाना ही होगा।
3. बड़े भाई को ही जिम्मेदारी उठानी है ।

ख

1. जो जैसा सोचता है उसके साथ वैसा ही होता है।
2. शीला जो चाहती है वह न हुआ तो बवाल हो जायेगा ।

aglasem.com

Page : 12 , Block Name : भाषा अध्ययन

Q1 'व्यक्ति कि पहचान उसकी पोषक से होती है । इस विषय पर कक्षा में परिचर्चा कीजिए।
Answer. छात्र स्वयं करें ।

Page : 12 , Block Name : योग्यता विस्तार

Q2 यदि आपने भगवाना कि माँ जैसी किसी दुखिया को देखा है तो उसकी कहानी लिखिए।
Answer. छात्र स्वयं करें ।

Page : 12 , Block Name : योग्यता विस्तार

Q3 पता कीजिए कि कौन-से साँप विषैले होते है? उनके चित्र एकत्र कीजिए और भित्ति पत्रिका में लगाइए।
Answer. छात्र स्वयं करें ।

Page : 12 , Block Name : योग्यता विस्तार